ईश्वरीय अनुकृति का दिव्य दर्शन 'दादी प्रकाशमणि जी'

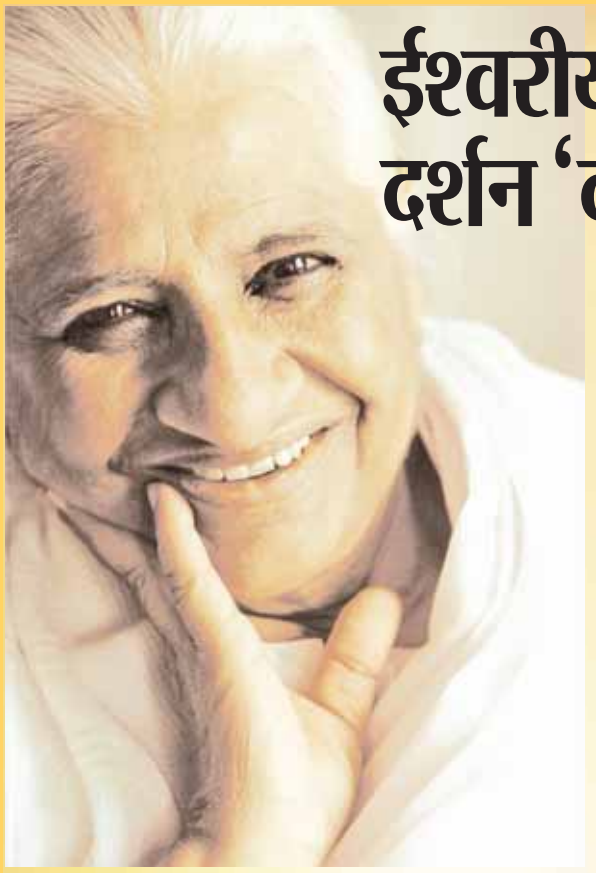

कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देय
मीठे वचन सुनाय के, जग अपना कर लेय।।

दादी प्रकाशमणि के मुखारविन्द से निकलने वाले हर एक शब्द और वाक्य सुनकर सभी ब्रह्मावत्स आंदोलित, हर्षित मुख हो उठते थे। तभी तो सभागार में दादी जी के प्रवेश करते ही बिना किसी प्रेरणा के सभी खड़े होकर दादी जी का स्वागत करते और जाते समय खड़े होकर आभार व्यक्त करते थे। ये दादी जी के ओज, तेज, स्नेह और ममतामयी प्रत्यक्ष ईश्वरीय पालना की मेरे जीवन की अनुभूति है। जो कि आज प्रेरणा रूप से मेरे जीवन को सिंचित, पोषित करके आगे बढ़ा रही है। दादी जी के द्वारा ही इस ब्राह्मण जीवन में साक्षात ईश्वरीय पालना की दिव्य अनुभूतियों से पोषित मैं यह देखता था कि स्नेहमयी वाणी, समदर्शी दृष्टि, हृदयस्पर्शी सम्बोधन द्वारा दादी जी के सम्मुख आने वाली हर आत्मा को आत्मियता (अपनेपन) की अनुभूति होती थी।

ईश्वरीय पालना देने वाली दादी से मेरा एक निजी व्यवहारिक साक्षात्कार :-

हर वर्ष बाप-दादा मंगल मिलन कार्यक्रम के सुअवसर पर कुछ आत्माओं को मधुबन में भिन्न-भिन्न सेवाओं का विशेष सौभाग्य प्राप्त होता है। मेरे जीवन में भी ऐसे अनेक अवसर आए। ऐसी स्मृतियों के झरोखे से एक वृत्तांत, अनुपम अनुभूति इस प्रकार है। मुझे एक बार बाप-दादा मिलन कार्यक्रम में आये ब्रह्मावत्सों (भाई-बहनों) का दादियों से मिलन, टोली और उपहार वितरण समारोह में व्यवस्था प्रबंधन में सेवा-सहयोग का अवसर मिला। पहले भी(बचपन में) दादी जी से मिला था किन्तु यथार्थ ज्ञान, समझ नहीं थी। परंतु अब जो अनुभव कर रहा था वह अद्भुत, अविस्मरणीय, स्वप्निल लग रहा था। मैं दादी जी के इतने निकट खड़ा था कि मैं जब चाहूँ उन्हें स्पर्श कर सकता था। किन्तु स्पर्श की आवश्यकता ही नहीं थी, क्योंकि उनसे प्राप्त हो रहे दिव्य प्रकम्पनों से हृदय हर पल भाव-विभोर हो रहा था। मैं देखकर

- ब्र.कु. रमेश, त्रिलोकपुरी, दिल्ली

अनुभव कर रहा था कि दादी जी के सामने से दो पल की दृष्टि पाने वाली आत्मायें उनकी स्नेहमयी दृष्टि पाकर भरपूर हो तृप्त अनुभव करके जा रही हैं, और मेरा भाग्य कि दो-चार पल नहीं, डेढ़ से दो घंटे तक मैं उस स्नेहमयी, तेजोमय, पवित्रता और शान्ति की अनुकृति के कुण्ड के प्रभाव क्षेत्र में ही समाया हुआ था। वहाँ पर मैं कई बार इतना लवलीन हो जाता था अपनी स्वप्निल प्राप्तियों में कि दूसरे सेवाधारी मुझे मेरी सेवा की याद दिलाते थे।

मीठी दादी जी इतनी निर्मलचित्त थीं कि छोटे-बड़े का भेद कभी किसी भी ब्राह्मण को शायद ही अनुभव हुआ हो। बच्चों के साथ उनका बाल रूप भी दिखता था। दादी जी निमित्त भाव से सब पर स्नेहमयी दृष्टि, निर्मान भाव से सर्व प्रति बोल-व्यवहार का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बनीं। एक बार स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् सभी सेवाधारियों को दादी अपने हाथों से टोली दे रही थीं। मेरी बारी अंत में आई तो मैं अपने घुटनों के बल बैठ दादी से दृष्टि लेते हुए टोली(तिल-गुड़ के छोटे-छोटे लड्डू) ले रहा था, तभी दादी ने टोली देते थोड़ी आँखें बड़ी की और मुस्कराते हुए टोली हाथ में रख दी। मैं खोया-सा बैठा रहा। दादी जी ने दुबारा हाथ में थोड़ी टोली डाल दी। मैं बैठा ही रह गया, तो अमृत भाई(जो दादी की सेवा में थे) ने कहा कि भाई जी हो गया। मैं सचेत हो उठा। फिर दादी ने भी मेरे साथ टोली खाई। मैं चकित भी और हर्षित भी था कि इतनी बड़ी हस्ती और मुझ साधारण से व्यक्ति के साथ इतना अपनापन वाला व्यवहार!

यह सब देखकर ऐसा लगा कि दादी जी कितना निर्मानचित्त, कोमल हृदय हैं। अपनी निर्मल वाणी से सबको स्नेह, प्रेम का अनुभव कराकर मन शांत कर, हृदय को परिवर्तन कर देने वाली, ऐसी थी हमारी प्रिय दादी प्रकाशमणि जी। दादी में मैंने देखा बिल्कुल आत्मीय भाव रहता था। दादी के सामने जो भी आता, उसे गहरे अपनेपन की अनुभूति होती थी। उनके लिए न कोई गरीब था, न कोई अमीर, सब एक समान थे उनके लिए। हम भी जब मिलते तो हमारे मन में भी वही भाव जाग जाते जो दादी में रहते। इसलिए दादी के साथ कभी ये नहीं लगा कि ये संस्था की हेड हैं, बड़े हैं और हम साधारण हैं। इसलिए तो दादी सबकी 'दादी' बनीं। उनकी ऐसी निर्मलता और निर्मानता ने ही कई निर्माण किये और वे इतनी महान बनीं। आज हम दीया लेकर भी ढूंढ़ें तो उनका कोई शत्रु या विरोधी नहीं मिलेगा, क्योंकि किसी विरोधी को भी उनसे सदा स्नेह ही मिला। आज कोई भी ब्रह्मावत्स उन्हें भुलाये भी नहीं भूल सकता। आज भी प्रकाश स्तम्भ पर दादी की प्रेम-पालना और स्नेहयुक्त प्रेरणादायी अलौकिक अनुभूति होती है। उनकी सिखायी हुई बातों को जीवन में धारण कर प्रेरणा लेकर हम सभी ब्रह्मावत्स उन्हें हृदय से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

जालोर-राज.। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. रंजू। उपस्थित रहे समाज सेवी वेदपाल मदान,भारत विकास परिषद, पी.एल. सोनगरा, सेवानिवृत्त ए.जी.एम.,एस.बी.आई., मदन बोहरा,प्रसिद्ध उद्यमी, कालू राज मेहता,लायंस क्लब, के.सी. शर्मा,सेवानिवृत्त अधिकारी, मरूधरा ग्रामीण बैंक, भवर लाल परिहार, लायंस क्लब पूर्व अध्यक्ष श्याम गोयल तथा अन्य अतिथिगण।

नरवाना-हरियाणा। विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण प्रति जन-जन को जागरुक करने हेतु रैली निकालते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें। उपस्थित रहे भारतीय योग संस्थान के केन्द्र प्रमुख राजेन्द्र गर्ग, मंत्री अधिवक्ता रणधीर धनोरी तथा ब्र.कु. सीमा।

रूरा-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए समाजसेविका कंचन मिश्रा, आर.एस.एस. योगा टीचर ललित तिवारी, ब्र.कु. सहदेव, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. मनोज तथा अन्य।

शिकोहाबाद-प्रोफेसर कॉलोनी(उ.प्र.)। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अभियान के स्वागत कार्यक्रम में मंचासीन ब्र.कु. पूनम, यात्रा मैनेजर ब्र.कु. कल्पेश, यात्रा इंचार्ज ब्र.कु. पूजा तथा अभियान यात्री।

कथा सरिता

विश्वास

एक आदमी जब भी दफ्तर से वापस आता, तो कुत्ते के प्यारे से पिल्ले रोज़ उसके पास आकर उसे घेर लेते थे, क्योंकि वो रोज़ उन्हें बिस्किट देता था। कभी चार, कभी पाँच, कभी छः पिल्ले रोज़ आते और वो रोज़ उन्हें पारले बिस्किट या ब्रेड खिलाता था। एक रात जब वो दफ्तर से वापस आया तो पिल्लों ने उसे घेर लिया, लेकिन उसने देखा कि घर में बिस्किट और ब्रेड दोनों खत्म हो गए हैं। रात भी काफी हो गई थी। उस वक्त दुकान का खुला होना भी मुश्किल था। सभी पिल्ले बिस्किट का इंतज़ार करने लगे। उसने सोचा, कोई बात नहीं, कल खिला दूंगा, और ये सोचकर उसने अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया। पिल्ले अभी भी बाहर उसका इंतज़ार कर रहे थे। ये देखकर उसका मन विचलित हो गया। तभी उसे याद आया कि घर में मेहमान आये थे, जिनके लिए वो काजू बादाम वाले बिस्किट्स लाया था। उसने फटाफट डब्बा खोला तो उसमें सिर्फ सात-आठ बिस्किट्स थे। उसके मन में ख्याल आया कि इतने से तो कुछ नहीं होगा, एक का भी पेट नहीं भरेगा, पर सोचा कि चलो सब को एक-एक दे दूंगा, तो ये चले जायेंगे। उन बिस्किट्स को लेकर जब वो बाहर आया तो देखा कि सारे पिल्ले जा चुके थे, सिर्फ एक पिल्ला उसके इंतज़ार में अभी भी इस विश्वास के साथ बैठा था कि कुछ तो ज़रूर मिलेगा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने वो सारे बिस्किट्स उस एक पिल्ले के सामने डाल दिये। वो पिल्ला बड़ी खुशी के साथ वो सब बिस्किट्स खा गया और फिर चला गया। बाद में उस आदमी ने सोचा कि हम मनुष्यों के साथ भी तो यही होता है। जब तक ईश्वर हमें देता रहता है, तब तक हम खुश रहते हैं, उसकी भक्ति करते हैं, उसके फल का इंतज़ार करते हैं, लेकिन भगवान को ज़रा सी देर हुई नहीं कि हम उसकी भक्ति पर संदेह करने लगते हैं। दूसरी तरफ जो उस पर विश्वास बनाये रखता है, उसे उसके विश्वास से ज़्यादा मिलता है। दोस्तों, इसलिए अपने प्रभु पर विश्वास बनाये रख अपने विश्वास को किसी भी परिस्थिति में डिगने न दें। अगर देर हो रही है तो इसका मतलब है कि प्रभु आपके लिए कुछ अच्छा करने में लगे हुए हैं।